CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

वीर सेना नायक बोयत राम डूडी

सज्जन सिंह
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
एस.एम.टी. गर्ल्स कॉलेज, सिंगनौर, झुंझुनू, राजस्थान
Email - sajjangill693@gmail.com, *Mob.-9413533833*

सारांश

प्राचीन काल से ही सम्पूर्ण राजपुताना क्षेत्र में शेखावाटी वीरों की भूमि रही है। यहाँ के दानी लक्ष्मी पुत्र सरस्वती के अमर , –साधक और शक्ति व त्यागबलिदान के सपूतों की अनोखी गाथाओं ने अपनी अलग पहचान बनाए रखी है। शेखावाटी क्षेत्र में प्रागैतिहासिक काल से मानव का अधिवास रहा है।इस क्षेत्र में पाषाण काल के अवशेष सोहनपुर, बाडवास, कोट, मावणडा, राणासर आदि स्थानों से मिले है । ताम्र पाषाण कालीन सभ्यता गणेश्वर भी शेखावाटी में ही स्थित है।

महाजनपद काल में यह क्षेत्र मत्स्य जनपद का हिस्सा था । मौर्य शासकों के समय पर यह क्षेत्र मौर्य शासकों के अधीन रहा उसके बाद इस क्षेत्र को साल्व प्रदेश के नाम से जाना जाने लगा जिसमे नागौर व शेखावाटी के भागों को शामिल किया गया है।

मुख्य शब्द : सर्वोतम सैनिक, उतम नस्ल, मत्स्य जनपद *आदि.*

प्राचीन काल से ही सम्पूर्ण राजपुताना क्षेत्र में शेखावाटी वीरों की भूमि रही है। यहाँ के दानी लक्ष्मी पुत्र सरस्व,ती के अमर साधक और शक्ति व त्याग–बलिदान के सपूतों की अनोखी गाथाओं ने अपनी अलग पहचान बनाए रखी है। शेखावाटी क्षेत्र में प्रागैतिहासिक काल से मानव का अधिवास रहा है।इस क्षेत्र में पाषाण काल के अवशेष सोहनपुर, बाडवास, कोट, मावणडा, राणासर आदि स्थानों से मिले है ।[1] ताम्र पाषाण कालीन सभ्यता गणेश्वर भी शेखावाटी में ही स्थित है।[2]

महाजनपद काल में यह क्षेत्र मत्स्य जनपद का हिस्सा था । मौर्य शासकों के समय पर यह क्षेत्र मौर्य शासकों के अधीन रहा उसके बाद इस क्षेत्र को साल्व प्रदेश के नाम से जाना जाने लगा जिसमे नागौर व शेखावाटी के भागों को शामिल किया गया है।[3]

पाणिनि ने साल्व जनपद की मुख्य विशेषतायें बताई है जिनमें- सर्वोतम सैनिक ,उतम नस्ल के गाय–बैल व राबड़ी के शौकीन नागरिक शामिल है। [4]

वर्तमान में तीनों विशेषतायें शेखावाटी क्षेत्र की विशेष पहचान है । यहाँ पर प्रबल पराक्रमी बान और -आन, सबल साहसी ,मर्यादा के सजग प्रहरी शूरवीरों के रक्त – बीज से शेखावाटी के रूप में यह वटवृक्ष अपनी अनेक शाखाओं – प्रशाखाओ में लहराता झूमता और प्रस्पुटित , हो रहा है आज भी शेखावाटी का नाम लेते ही रक्त में शौर्य का संचार होती है।[5]

यहाँ के सैनिकों के मन में हमेशा यही बात रहती है की [6]–

"**मन विश्वास जीवड़ा कायर कीम दौड़,**

मरसी कोठे " लोहे के उबरसी चौड़े,

[1] राजस्थान के इतिहास के स्रोत, पुरातत्व भाग 1 शर्मा गोपीचंद पृ. 11-12

[2] राजस्थान का इतिहास परम्परा एवं विरासत जैन हुकुम चंद माली, नारायण लाल पृ. 20

[3] देवड़ा भरत ,कुल्हार देवेन्द्र , शेखावाटी किसान आंदोलन एवम् स्वतन्त्रता सेनानी चौधरी ताराचंद झारोड़ा पृ. 2 (उद्धरित मूल रूप पाणिनि पुस्तक से)

[4] अग्रवाल वासुदेव शरण,पाणिनि कालीन भारत पृ. 48,105 देवड़ा भरत ,कुल्हार देवेन्द्र , शेखावाटी किसान आंदोलन एवम् स्वतन्त्रता सेनानी चौधरी ताराचंद झारोड़ा पृ. 2,शेखावत सुरजनसिंह,शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास पृ. 3

[5] सारस्वत माधवानंद कारगिल के शहीदों की शौर्य गाथाएँ,भूमिका

[6] तारादत्त गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की पृ. 89

अर्थात की युद्ध में नहीं जाने से व्यक्ति का जीवन बच जाता है इसलिए कायर बनकर दौड़ने से लाभ नहीं ।

आजादी से पहले यहाँ के अनेक निवासियों ने ब्रिटिश सेना में माउन्टबेटन की इस घोषणा के आधार पर हिस्सा लिया कि द्वितीय विश्व युद्ध में अगर हम विजय हुए तो भारत देश को आजाद कर देंगे[7]। वर्तमान समय में भी उन स्वतन्त्रता सेनानियों की परिपाटी को निभाते हुए आजादी को निरंतर व शांतिकाल में भी देश की सीमाओं पर प्रशिक्षण एवं घटनाओं में सैनिक शहादत को प्राप्त होते है। पुरे राजस्थान राज्य के अकेले शेखावाटी क्षेत्र से शहादत अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिशत है 3[8]।

जबतो इन वीरों ने ,जब देश की धरती मां की रक्षा का सवाल आया - अपने खून से इस मिट्टी को सींच कर त्याग व बलिदान का परिचय दिया उसी क्रम में शेखावाटी की भूमि परजन्मे झुंझुनू जिले के बोयत राम डूडी का नाम बड़ी शान से लिया जाता है।

जन्म व परिवार

बोयत राम डूडी का जन्म शेखावाटी के झुंझुनू जिले की उदयपुरवाटी तहसील के गावं भोड़की में हुआ। आपका जन्म को 1923 जुलाई 21 भोड़की गावं में एक छोटी सी ढाणी में हुआ[9]जो की झुंझुनू जिला , किलोमीटर दूर दक्षिण दिशा में स्थित है वही यह गावं 40 मुख्यालय से किलोमीटर दूरी पर आबाद 20 तहसील स्तर से उत्तर दिशा की तरफ है[10]। आपके जन्म के समय हमारा देश अंग्रेजो का गुलाम था[11]। आपका लालन पालन एक किसान परिवार में हुआ आपका बचपन भी यही गावं की गलियों में गुजरा पढाई का महत्त्व उस समय ना तो पता था व ना ही कोई उचित व्यवस्था थी आप पढ़े लिखे नहीं है। **बोयत राम डूडी)1.1 (** आपके पिताजी का नाम गणेशराम था । वे भी स्वतन्त्रता के लिए लड़ चुके थे उन्होंने भी तुर्की की लड़ाई में हिस्सा, लिया था । आप भाईओं में से आपने ही देश को गुलामी की जंजीरों 6 से मुक्त करवाने का अथक प्रयास किया। आपका विवाह नवलगढ़ तहसील के कारी गावं में श्रवणी के साथ हुआ। आपको इन से पुत्र 3 मुकन्दराम व घासीराम है, हुए जिनमे भरतराम। आपका एक पुत्र घासीराम भारतीय थल सेना में अपनी सेवा देकर सेवानिवृत्त हो चुका है। परन्तु दुःख की बात यह की उनका अंतकाल में हो गया 1988 आपका एक पोत्र भी भारतीय सेना में अपनी सेवा दे रहा है।[12]

स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में बोयत राम की भूमिका

आप ने बताया की उस समय माउन्टबेटन के द्वारा घोषणा की गई की अगर भारत के नवयुवक हमारा साथ देते है और हम द्वितीय विश्व युद्ध में विजय हो जाते है तो भारत देश को आजाद कर देंगे। उस समय घर से ही अंग्रेज भर्ती के लिए नवयुवकों को चुन कर ले जाते और फिर उनकी शारीरिक दक्षता परीक्षा ली जाती थी। उस समय नीम का थाना जयपुर जिले में भर्ती हो रही (वर्तमान में सीकर जिले में स्थित) थी।आपको भी घर से ही अग्रेज सैनिकों ने चुना थाइसलिए आप भी ,) नीम का थाना40 किलोमीटर पैदल गए ([13]। वहां आपकी शारीरिक दक्षता परीक्षा के तौर पर दौड़ हुई जिसमे पास होने वाले नवयुवकों को 10 चाँदी के सिक्के देकर भर्ती किया गया। आप ने इस शारीरिक दक्षता परीक्षा को पास कर लियावर्ष थी 19 तब आपकी उम्र महज ,। आपको सेना प्रशिक्षण के लिए देहली भेजा गया । वहां पर आपकी माह का 4 सैन्य प्रशिक्षण हुआ जिसमें आपको हथियार चलाना सिखाया उसके बाद प्रत्येक सैनिक के हाथ में गंगा जल देकर देश रक्षा की , गया शपथ दिलाई गई जिसमे तिरंगे को कभी नहीं झुकने देगे और मरते दम तक भारत माता की रक्षा करने का वादा शामिल था। आपकी सेना बटालियन को फिर युद्ध में भेज दिया गया जिसमे रजरिफ की सैन्य 4 टुकड़ी शामिल थी। जिसमें ,रजरिफ1 ,रजरिफ 4 एम,बटालियन.जी. 6 रजरिफ को शामिल किया गया था। आप रजरिफ में थे इस सेना के 1 साथ जयपुर के महाराजा मानसिंह द्वितीय की सेना टुकड़ी मानगट ने भी युद्ध में भाग लिया था।बोयत राम डूडी बताते है की आज भी जब मै याद करता हु तो वो पल मेरे सामने एक मंजर की तरह याद आते है ।हमें पानी के जहाज से को अदन होती हुए पोटसुज 1942 सितम्बर 9 नामक स्थान पर रात को उतरा गया वहां से जरुसलम ले जाया गया उस वक्त वहां के मेजर सूबेदार ताराचंद भी शेखावाटी के वीर सपूत थे।उन्होंने हमें रात भर के लिए टेंट में रोका और सुबह होते ही लड़ाई पर भेज दिया गया हमारे पास हथियारों में एम एम 9 ,पिस्तौल स्टेन गन, 3 ,इंच मोटर इंच मोटर 2 व ब्रेन गन थी आप

किलो वजन रहता था 30 बताते है की एक सैनिक के पास। इसके अलवा ग्रेनेड व हाथ से आग लगा कर फेकें जाने वाले गोले से 36 हमने लड़ाई लड़ी[14]। आपके पास नंबर बन्दूक थी जिसका 3 मार्क 1 8 वजन.आउस था 10। उसमे गोलियां एक साथ डाली जाती थी 10[15]।

इटली स्टार)1.2(

आपने इटली में माह तक लड़ाई लड़ी वहां पर लड़ाई के दोरान 11 आपको एक गोलीपेट में लगी जो की पेट की खाल को चीरते हुए निकल गई[16]। फिर भी आपने अदम्य साहस का परिचय देकर मोर्चे में लड़ाई करने ना निश्चय किया और अपने साथी की सहायता से ब्लेट पट्टी को घाव पर बांधकर फिर से अपनी धरती माँ की आजादी के लिए लड़ने लगे इसी बहादुरी के कारण आपको **इटली स्टार से सम्मानित** किया गया[17]।आप बताते है की चाइना की फोज़ लड़ाकू किस्म की नहीं हैजब आप को चाइना की तरफ लड़ाई लड़ी तो ,

---

[7] शेखावाटी भास्कर मुख्य पृ.15 -08 -2022

[8] तारादत्त गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की पृ. 55 ,सारस्वत माधवानंद कारगिल के शहीदों की शौर्य गाथाएँ,भूमिका

[9] स्वयं द्वारा सर्वे , शेखावाटी भास्कर मुख्य पृ.15 -08 -2022

[10] सुरजनसिंह शेखावत राव शेखा (प्राक्कथन), जिला दर्शन झुंझुनू वर्ष 2017 पृ.28

[11] मिश्र गंगाशंकर, भारत में ब्रिटिश साम्राज्य, पृ.238

[12] व्यक्तिगत साक्षात्कार,बोयत राम डूडी उम्र 99 वर्ष दिनांक 29,अगस्त,2022

[13] शेखावाटी भास्कर मुख्य पृ.15 -08 -2022, व्यक्तिगत साक्षात्कार,बोयत राम डूडी उम्र 99 वर्ष दिनांक 29,अगस्त,2022, व्यक्तिगत साक्षात्कार,राजकुमार सैनी पत्रकार (राजस्थान पत्रिका)ग्राम –गोस्वामी का मठ,भोरकी ,झुंझुनू, व्यक्तिगत साक्षात्कार, भरतराम,बोयत राम के पुत्र उम्र 48 वर्ष

[14] व्यक्तिगत साक्षात्कार, राजकुमार सैनी पत्रकार उम्र 46 वर्ष (राजस्थान पत्रिका)ग्राम –गोस्वामी का मठ,भोरकी ,झुंझुनू

[15] व्यक्तिगत साक्षात्कार, भरतराम डूडी ,बोयत राम के पुत्र उम्र 48 वर्ष

[16] व्यक्तिगत साक्षात्कार,बोयत राम डूडी उम्र 99 वर्ष दिनांक,29,अगस्त,2022,स्वयं द्वारा घाव के निशान का सर्वे(पेट पर दाहिने तरफ निशान)

[17] व्यक्तिगत साक्षात्कार व सर्वे,चिड़ावा भास्कर 15-08-2022

आपकी बटालियन झील को तैर कर पार करते और कन्हार पहुचकर वहां उनकी सेना को आत्मसमपर्ण करवाया आपने दक्षिण अफ्रीका में सा 4 भी लड़ाई लड़ी जहाँ पर आपल रहकर मोर्चे को संभाले रखा जिसके लिए भी आपको दक्षिण अफ्रीका स्टार से सम्मानित किया गया आपने द्वितीय विश्व युद्ध में इटली लीबिया व , गंदेक,दक्षिण अफ्रीका , अफगानिस्तान में मोर्चो को संभाला जिसके लिएआपको 3 स्टार व 3 मेडल मिले जिनको पोस्ट ऑफिस के द्वारा आपके घर भेजे गए जर्मनी में लड़ाई करते वक़्त आप बहुत से सैनिकों की हताहत हुई क्योंकि अमेरिका ने अग्रेजी सेना का साथ देते हुए बमबारी कर रहा थातो , दूसरी तरफ से जर्मन बमबारी कर रहा था[18]। जिसके बीच में आपकी सेना बटालियन फँसी हुई थी दोनों तरफ से घिर जाने के बाद माउन्टबेटन ने कहा की हथियार डाल दो

दक्षिण अफ्रीका स्टार)1.3(और ऊपर हाथ खड़े कर के आत्मसमपर्ण करो तभी बटालियन के सैनिकों ने कहा की हम हथियार नहीं डालेंगे और नारा दिया **"एक गोली एक जवान"** अर्थात हम तब तक लड़ाई लड़ेंगे जब तक हमारे पास एक गोली और एक जवान जीवित रहेगा इस स्थिति में हमारी बटालियन के एक दिन में जवानों ने 1300 शहादत दी थी।।

बोयत राम को सेवा के दौरान प्राप्त मेडल)1.4(

अंत में जर्मन ने में आत्मसमपर्ण कर दिया 1942[19] परन्तु जनिफा ,व हाईफा सिद्दी बरानी में जर्मन के दो कैदीवाड़े हैजिनमे कुछ भारतीय , सैनिकों को कैद कर लिया गया जिनमें आपके साथी को पकड़ लिया गया (झुंझुनू,शीशिया)धनजी। उनको वर्ष बाद रिहा 7 महाबक्श सिंह मारे गए , किया गया आपके कुछ साथी जिनमे जयसिंह सैनिकों की श 100 वही लगभगहादत अकेले शेखावाटी के गावों में हुई ।जिनमें सबसे ज्यादा राजपूत सैनिक थे क्योंकी उन की बटालियन सबसे आगे थी आप बताते है की पोर्टशूज में सुभाषचन्द्र बॉस व गाँधी , जी भी मिलने आते थे और कहते हिंदुस्तान का नाम ऊँचा करो तिरंगे को झुकने मत देना तथा कभी कभी कुछ खाने के लिए भी लाते थे। आपकी सेना ने तुर्की में युद्ध किया भारतीय सेना पर अंग्रेजी अधिकारी कम ही विश्वास करते थेभारतीय टुकड़ीयों के साथ 3 इसलिए हमेशा , एक अंग्रेजी सेना टुकड़ी रहती थी। जिसको आदेश दिया गया था की अगर कोई भी भारतीय सैनिक वापस भागे तो उनको गोली मार दो । इस युद्ध के दौरान आपको एक महीने से नहाने का समय मिलता था कभी कभी तो वो भी नहीं मिलता था,। आपको नए कपड़े दे दिय जाते थे और पुराने वाले कपड़े पीछे भेज दिय जाते थे जो एक माह , बाद जब कपड़े बदलते तब वापस मिलते थे।वही खाने में आपको बहुत अच्छा भोजन मिलता था। भोजन को लेकर भारतीय सैनिक और गोरे सैनिकों में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता था।अगर किसी दिन भोजन ना मिले तो सभी को पहले से ही बहुत सी चोकलेट दी जाती थी जो बहुत बड़ी बड़ी होती थी आप आज उसकी कीमत, रूपए बताते हो 100। आप बताते है की जापान ने भी म 1945ें ं आत्मसमर्पण कर दिया था। द्वितीय विश्व युद्ध में बहुत से सैनिक मारे गए थे जहाँ पर लगभग ,जिनका कब्रिस्तान तुकबुरीस्तान में स्थित है , 1,जवानों की शवों को दफनाया गया है और उनकी कब्र के 00000 सामने रबड की तकतियां लगाकर उनकी पूरी जानकारी को लिखा गया है। आपने वहां पर वर्ष स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी जिस दौरान 5 में तीन माह की छुट्टी मिली भी थी 1944 आपको आप बाजार जाते तब आपको अपनी सेना की टोपी लगा कर जाना आवश्यक था । टोपी पर रजरिफ सेना का चिन्ह लगा रहता था[20]।

स्वदेश आगमन

जब आप वर्ष बाद स्वदेश लोटे तो जयपुर के 5महाराजा मानसिंह द्वितीय ने दिन के लिय जयपुर जिले में रोका और जीत की ख़ुशी में 15 दावत दी। आपको पेरिस घुमाने ले जाया गया आप बताते है की पेरिस शहर में प्रवेश होने के पहले ही किलोमीटर से वहां के प्रशासन को 2 पता लग जाता है की कोई आ रहा है।क्योंकी वहां की सड़के कांच की बनी हुई है। शेखावाटी के स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रति आभार प्रकट किया जिन्होंने महाराजा मानसिंह द्वितीय का नाम नीचे नहीं होने दिया।

एक सैनिक के रूप में बोयत राम

आपको एक स्वतन्त्रता सेनानी व सैनिक का दर्जा दोनों प्राप्त है । आप ने भारतीय स्वत 1942न्त्रता सेनानी के रूप में द्वितीय विश्व युद्ध के लिए माउन्टबेटन के वादे से भारत माता को आजाद करवाने गये थे और भारत माता को अंत में गुलामी की जंजीरों से आजादी दिलाकर ही में सेवानिवृत हुए 1957[21]। जब आप सेना में थे उस समय आपका वेतन रूपए था 40। जिसमे रूपये 20आपके घर पर आते जबकि 20 रूपए आपको दिय जाते थे।जब आप सेवानिवृत हुए तो आपकी पेंशन महज रूपए थी 16। जो वर्तमान में हजार रूपए हो गई है 35000। झुंझुनू जिले में सर्वाधिक समय से पेंशन लेने का रिकॉर्ड आपके नाम है।आप पिछले सालों से पेंशन ले रहे है 65।हाल ही में आपकावा 98 जन्मदिन भोड्की ग्राम पंचायत के एकीकृत स्टेडियम समिति की ओर से मानकर आपको सम्मानित कर एक प्रशस्तिपत्र भेंट किया गया - आपकी याद को चिरस्थाई बनाने के लिए आपके हाथों से एक पेड़ स्टेडियम में लगवाया गया है[22]।

नवयुवकों को सन्देश

आज के नव पीढ़ी को सन्देश देते हुए आप कहते है कि समय के साथ सेना कमजोर होती जा रही है ।इसलिए और योग्य अफसरों को भर्ती किया जाय हाल की घटनाओं को सुन कर उनके दिल को ठेस पहुचती

---

[18] व्यक्तिगत साक्षात्कार,बोयत राम डूडी उम्र 99 वर्ष दिनांक,29,अगस्त,2022

[19] व्यक्तिगत साक्षात्कार,बोयत राम डूडी उम्र 99 वर्ष दिनांक,29,अगस्त,2022, व्यक्तिगत साक्षात्कार, राजकुमार सैनी पत्रकार उम्र 46 वर्ष (राजस्थान पत्रिका)ग्राम –गोस्वामी का मठ,भोरकी ,झुंझुनू,झलको झुंझुनू में बातचीत के दोरान स्वयं बोयत राम डूडी ने बताया

[20] व्यक्तिगत साक्षात्कार,बोयत राम डूडी उम्र 99 वर्ष दिनांक,29,अगस्त,2022

[21] व्यक्तिगत साक्षात्कार व सर्वे,चिड़ावा भास्कर 15-08-2022

[22] सैनी राजकुमार ,भोरकी दिग्दर्शन व्यक्तिगत साक्षात्कार व सर्वे,चिड़ावा भास्कर 15-08-2022

है । वे कहते है की हमें मिलजुल देश की सीमाओं की रक्षा करनी होगी।सभी का कर्तव्य है की वे तिरंगे झंडे को झुकने ना दे और शपथ ले की हम सब मिलजुल कर देश को आगे बढ़ाने के लिय यथासंभव प्रयास करेंगे किसी से दुश्मनी नहीं रखेंगेशराब व अन्य बुरी आदतों से खुद को , बचाकर देश की प्रगति में सहयोग करेंगे[23]।

सारांश

- स्वतन्त्रता सेनानी व सैनिक के रूप मे देश के लिए योगदान उजागर होगा ।
- आपके बारे में भावी पीढ़ी को अवगत करवाना।
- आपके सन्देश को जनमानस तक पहुंचना।
- आपकी बहादुरी और साहस से लोग परिचित होगें।
- स्वतन्त्रता सेनानी द्वारा देश की मिट्टी के लिए किय गए त्याग व बलिदान को बतलाना।
- आपको मिलने वाले सम्मान के बारे में बताना।

सैनिको को अपने बारे मे यही आत्मबोध होता है इतना ज्ञान उन्हे अवश्य है

‘‘कला जो परखी आएगी सीख दिय साराह

बढे न उमर कायरा घटे न जुझारा

अर्थात अपना ह्रदय टटोलो तो आत्मा ज्ञान से दूसरो को यही शिक्षा दोगे की कायर बनने से उमर नही बढ़ जाती और शौर्यपूर्ण जीवन बिताने से घट नही जाती क्युकी -

हर कहिय वै लिख्या लिख लिख घाल्या अंक

राइ घटे ना तिल बढे रह रह जीव नीःशंक

वीरो का सदैव से आदर्श रहा है -

जन्म अकारण ही गयो बढ़ सिर खगन जंग तीखा तुरी न मरिगाया गोरी गले न रंग अर्थात् उस वीर पुरुष का जन्म भी व्यर्थ ही गया यदि उसका सिर युद्ध मे तलवार से न कटा हो या उसने अपने जीवन मे तेज घोड़ो की सवारी न की हो । देश के लिय युद्ध मे काम आना यहाँ के सैनिको का सौभाग्य रहा है और वे ऐसी प्रतिस्पर्धा मे कभी किसी से पीछे नही रहे ।[24]

[23] व्यक्तिगत साक्षात्कार,बोयत राम डूडी उम्र 99 वर्ष
दिनांक,29,अगस्त,2022
[24] तारादत्त गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की पृ. 90